B. A. (Hons) Part – I
Paper – II
Abnormal Psychology
By. Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D. Psy.
D.K. College, Dumraon
(Buxar).

उन्माद विषाद मनोविकृति क्या है? इसके नैदानिक स्वरूप (लक्षणों) एवं कारणों की विवेचना कीजिए।

असामान्य मनोविज्ञान में विविध प्रकार के मानसिक विकृतियों का अध्ययन किया जाता है। उन्माद-विषाद एक भावात्मक मानसिक विकृति है जिससे पीड़ित व्यक्ति की मनोदशा (mood) बदलते रहते हैं। यह एक गंभीर एवं घातक विकृति है जिसके दो पक्ष होते हैं:- (A) उन्माद एवं (B) विषाद। रोगी जब पहली अवस्था में होता है तो वह बहुत ही उत्साही एवं खुश दिखता है, परन्तु जैसे ही दूसरे अवस्था में प्रविष्ट होता है वह शांत एवं उदास रहने लगता है।

पहले लोगों की ऐसी मान्यता थी कि ये दोनों अलग-अलग विकृतियाँ हैं। परन्तु फालरेट एवं बेलाजेर ने सर्वप्रथम बताया कि दोनों एक ही विकृति के दो रूप हैं। क्रेपलिन ने सर्वप्रथम बड़े ही व्यापक और स्पष्ट शब्दों में कहा कि "यह एक ही रोग के दो विरोधी लक्षण हैं जिसमें कभी Mania पक्ष की प्रधानता रहती है तो कभी Depression पक्ष की प्रधानता होती है और यह रोग पुरुषों की तुलना में महिलाओं को अधिक होती है।

DSM IV (1994) में इसे द्विध्रुवीय विकृति की श्रेणी में रखा गया है, होम्स (1998) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है:-

"द्विध्रुवीय विकृति एक मनोदशा विकृति है, जिसमें मनोदशा उन्माद एवं विषाद के बीच बदलती रहती है, पहले इसे उन्माद विषाद विकृति" कहा जाता था।"

नैदानिक स्वरूप (लक्षण) :- उन्माद विषाद एक द्विध्रुवीय मनोविकृति है। अतः इससे पीड़ित व्यक्ति जब Mania या उन्माद की अवस्था में रहता है तो अलग किस्म के लक्षण प्रदर्शित करता है लेकिन जब विषाद के अवस्था में होता है तो कुछ दूसरे प्रकार का लक्षण।

Scanned with CamScanner

B. A. (Hons) Part – I
Paper – II
Abnormal – Psychology
By – Dr. Ramendra Kumar Singh
HOD. Psy.
D.K. College, Dumraon (Buxar).

उत्साह-विषाद मनोविकृति क्या है? इसके नैदानिक स्वरूप (लक्षणों) एवं कारणों की विवेचना कीजिए।

असामान्य मनोविज्ञान में विभिन्न प्रकार के मानसिक विकृतियों का अध्ययन किया जाता है। उत्साह-विषाद एक भावात्मक मानसिक विकृति है जिससे पीड़ित व्यक्ति की मनोदशा (Mood) बदलते रहते हैं। यह एक गंभीर एवं घातक विकृति है जिसके दो पहलु होते हैं:– (A) उत्साह एवं (B) विषाद। रोगी जब पहली अवस्था में होता है तो वह बहुत ही उत्साही एवं खुश दिखता है, परन्तु जैसे ही दूसरे अवस्था में प्रविष्ट होता है वह शांत एवं उदास रहने लगता है।

पहले लोगों की ऐसी मान्यता थी कि ये दोनों अलग-अलग विकृतियाँ हैं। परन्तु फालरेट एवं बेलार्जर ने सर्वप्रथम बताया कि दोनों एक ही विकृति के दो रूप हैं। क्रेपलिन ने सर्वप्रथम बड़े ही साफ और स्पष्ट शब्दों में कहा कि "यह एक ही रोग के दो विरोधी लक्षण हैं जिसमें कभी Mania पक्ष की प्रधानता रहती है तो कभी Depression पक्ष की प्रधानता होती है और यह रोग पुरुषों की तुलना में महिलाओं को अधिक होती है।

DSM IV (1994) में इसे द्विध्रुवीय विकृति की श्रेणी में रखा गया है। होम्स (1998) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है:-

"द्विध्रुवीय विकृति एक मनोदशा विकृति है, जिसमें मनोदशा उत्साह एवं विषाद के बीच बदलती रहती है, पहले इसे उत्साह विषाद विकृति" कहा जाता था।"

नैदानिक स्वरूप (लक्षण): उत्साह विषाद एक द्विध्रुवीय मनोविकृति है। अतः इससे पीड़ित व्यक्ति जब Mania या उत्साह की अवस्था में रहता है तो अलग किस्म के लक्षण प्रदर्शित करता है लेकिन जब विषाद के अवस्था में होता है तो कुछ दूसरे प्रकार का लक्षण।

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत करता है जिसका दोनों अवस्थाओं में प्रदर्शित लक्षणों का वर्णन क्रमश: है।—

(A) उत्साह की अवस्था में प्रकट लक्षण।:-

जब इस विकृति से ग्रस्त व्यक्ति उत्साह की अवस्था में रहता है तो वह अति उत्साही एवं चुस्त-दुरुस्त दिखता है। वह नाचता है, गाता है, उछलकूद मचाता है। पीड़ित व्यक्ति कई तरह के भ्रम विभ्रम का शिकार होता है। उल्टा पुल्टा करना तोड़-फोड़ करना आम बात होती है। उत्साह की भी तीन अवस्था होती है।:-

— (i) हल्का उत्साह, (ii) तीव्र उत्साह (iii) अतितीव्र उत्साह। इस अवस्था में रोगी काल्पनिक उड़ाने भरता है। उसे सारा संसार आनन्दमय एवं सुखद लगता है। नैतिक नियंत्रण कमजोर हो जाता है। (ii) तीव्र उत्साह की अवस्था।:- अब रोगी संगीन अवस्था में प्रवेश कर जाता है। प्रथम उत्साह की अवस्था से उसकी क्रियाकलाप बढ़ जाती है। उसे बोरियत कम आने लगती है, अहंकारी हो जाता है। Insight एवं Judgement गड़बड़ा जाता है। विभ्रम बढ़ जाता है। तोड़फोड़ करने में मजा आता है।

(iii) अतितीव्र अवस्था।:- यह विकट अवस्था होता है। पीड़ित व्यक्ति में क्रमबद्धता का अभाव होता है। पागल हो जाता है। उसकी बाते में क्रमबद्धता का अभाव होता है। बेतुका बातें करता है। बेवजह ठहाका मारने लगता है। बालों को नोचना एवं काटने की आदत बढ़ जाती है।

इस तरह उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं में तीन लक्षणों की प्रधानता क्रमश: देखी जाती है — (i) उल्लास (ii) विचारों की उड़ान (iii) मनोगत्यात्मक क्रियाएँ।

(B) विषाद की अवस्था एवं लक्षण।:-

इस विकृति की दूसरी अवस्था विषाद की अवस्था होती है जिसमे पीड़ित व्यक्ति उदास एवं चिंताग्रस्त रहता है। वह निकम्मा एवं निष्क्रिय बैठे रहता है। वह खाना पीना छोड़ देता है और अपने को पापी तथा अपराधी समझता है। आत्महत्या के लिए प्रयास करते रहता है। इसके भी तीन उपअवस्थाएँ होती हैं। — (i) सरल अवसाद (ii) तीव्र अवसाद (iii) अति तीव्र अवसाद

(i) सरल अवस्था :- इस अवस्था में पीड़ित व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं में ह्रास हो जाता है। शारीरिक गतिविधियाँ कम होने लगती हैं। रोगी का बुद्धि ठीक रहता है पर बुद्धिहीन वाला काम करने लगता है। वह अपने आप को अपराधी समझने लगता है। खाना भी अपने से नहीं खा पाता है। कपड़े पहनने में दिक्कतें होने लगती हैं। कई तरह के विभ्रम एवं व्यामोह होने लगते हैं।

(ii) तीव्र विषाद :- इस अवस्था में प्रथम अवस्था की तुलना में तीव्रता बढ़ जाती है। वह अपने-आप को बड़ा पापी समझने लगता है। आत्महत्या का भी प्रयास करता है।

(iii) अतितीव्र अवसाद :- यह संगीन अवस्था है। अब उदासी चरम पर होती है। आत्मग्लानि की तीव्रता बढ़ जाती है। हिलने डुलने में असमर्थ हो जाता है। आत्महत्या भी कर लेता है।

सामान्य लक्षण →

उपर्युक्त ~~सामान्य~~ विशिष्ट लक्षणों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी लक्षण हैं जो सामान्यतः उत्साह विषाद के रोगियों में पाये जाते हैं :-

(i) प्रत्यक्षीकरण की अयोग्यता :- इससे पीड़ित व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण की योग्यता क्षीण हो जाती है। ऐसे लोगों में एकाग्रता की कमी आ जाती है। कभी प्रत्यक्षीकरण में अतिरंजना पाई जाती है तो कभी नैराश्य भाव के चलते प्रत्यक्षीकरण ही नहीं कर पाती है।

(ii) चेतना का लोप :- इसके रोगियों में समय स्थान एवं परिस्थिति का ज्ञान नहीं रहता है। इसमें अचेतन मन ~~अचेतन~~ मन पर हावी रहती है फलतः चेतना कमजोर हो जाता है। रोगी को अपने वातावरण का ज्ञान नहीं रहता है।

(iii) मिथ्या निर्णय :- इससे पीड़ित व्यक्ति सही एवं गलती का निर्णय करने में असमर्थ होते हैं। मिथ्याधारणाएँ इनमें प्रबल होती है। फलतः ~~व्यक्ति~~ की इच्छा आगर हो जाए तो ये अपने उपर से लेते हैं इनकी मिथ्या विश्वास इन्हें गलत निर्णय लेने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

(iv) विभ्रम एवं व्यामोह :- इसके रोगी में विभ्रम एवं व्यामोह के लक्षण पाये जाते हैं। इन्हें भूत, प्रेत, जिन्न दिखाई पड़ते हैं Lm Music

Scanned with CamScanner

अवस्था में होते हैं तो किसी को अपना प्रिय या रहनुमा समझ लेते हैं, तथा Depression की अवस्था में होते हैं तो किसी को अपना दुश्मन समझ बैठते हैं।

क्रोध एवं यौन संवेग की बहुलता :- इसके रोगी क्रोधी होते हैं अवसाद की स्थिति में यौन संवेग शिथिल पड़ा रहता है।

अन्य लक्षण - इससे पीड़ित व्यक्ति में स्मृति दोष, भूख की कमी, नींद की कमी या अति निद्रा आदि पाये जाते हैं।

कारण उन्माद विषाद के लिए कई कारक उत्तरदायी हैं, उन्हें हम तीन श्रेणियों में बाँट कर अध्ययन करेंगे :-

(क) जैविक कारक :- जैविक कारकों के तहत कई कारणों को रखकर अध्ययन किया जाता है। इसमें वंशपरम्परा, जैवरसायन, शरीर रसायन या आन्तरिक शारीरिक उपकुल आदि की मुख्य भूमिका होती है। अनेक अध्ययनों से इस बात की पुष्टि हुई है कि जिन व्यक्तियों के माता पिता या निकट सम्बन्धी इस बीमारी से ग्रस्त होते हैं, उनके बच्चों में यह विकृति की उत्पन्न होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

वंशानुक्रम के अलावे व्यक्ति की शारीरिक गड़बड़ियाँ, अन्तःस्रावी ग्रंथी की गड़बड़ियाँ, स्नायुमंडल की गड़बड़ियाँ आदि भी प्रमुख रूप से इस विकृति के लिए उत्तरदायी हैं।

(ख) मनोवैज्ञानिक कारण :- उन्माद-विषाद विकृति के लिए कई मनोवैज्ञानिक कारण भी उत्तरदायी हैं। कुसमायोजन, हीनभाव, लैंगिक इच्छाओं का प्रतिगमन एवं अन्य मनोवैज्ञानिक कारणों का यदि व्यक्ति लगातार सामना करता है तो Manic depression Psychoses से ग्रस्त हो सकता है। Adler का कहना है कि हीन भावना इस रोग के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारण है क्योंकि ऐसे लोगों के आत्मप्रकाशन का दमन हो जाता है। क्रेश्मर के अनुसार स्थूलकाय वाले व्यक्ति की temperament cycloid स्वरूप की होती है। अतः उनकी मनोदशाएँ बदलती रहती हैं जिससे उन्माद-विषाद से आक्रान्त होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

फ्रायड ने इस रोग की व्याख्या प्रतिगमन एवं Super ego के आधार पर की है। मुख अवस्था या

या मौखिक अवस्था में यदि प्रतिगमन हो जाता है तो यह रोग पनपता है। Id, Ego एवं Super Ego का सामंजस्य में गड़बड़ी भी इसके लिए उत्तरदायी है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण: समाजशास्त्रियों एवं अन्य मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि सामाजिक वंचन, भेदभाव त्रुटिपूर्ण समाजीकरण एवं अनावश्यक सामाजिक सांस्कृतिक प्रथाएँ भी इस विकृति के लिए जिम्मेवार हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अचानक आई दुःखद घटनाओं का मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। नौकरी से हटाया जाना, पारिवारिक असामयिक मौत आदि, प्रेम में मिली असफलता आदि वातावरणीय घटनाएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उपचार → इस रोग के उपचार में Medical therapy खासकर लिथियम कार्बोनेट से बनी औषधियाँ, Electric Shock therapy, Anti depressant drugs आदि के द्वारा सावधानीपूर्वक किया गया इलाज लाभदायक है। इसके अलावे कुछ मनोवैज्ञानिक प्रविधियों और समूह चिकित्सा व्यवसाय चिकित्सा, संमोहन आदि का भी Medical therapy के साथ सावधानीपूर्वक संयुक्त रूप से किया गया उपचार लाभदायक हो सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उत्साह विषाद एक ऐसी मनोविकृति है जिसमें उत्साह एवं विषाद दोनों पक्षों की बारी-बारी से या मिश्रित रूप से प्रधानता रहती है। इसीलिए इसे द्विध्रुवीय विकृति भी कहा जाता है। दोनों पक्षों में कई तरह के विपरीत लक्षण पाये जाते हैं। कभी एक पक्ष की प्रधानता रहती है तो कभी दूसरे पक्ष की प्रधानता रहती है। इसके लिए कई कारक उत्तरदायी हैं जिनमें Biological factors की मुख्य भूमिका होती है तथा उपचार में Medical therapy ज्यादा कारगर है यद्यपि Psychotherapies का संयुक्त उपयोग ज्यादा असरदायक हो सकता है।

R K Singh
02.06.2024
Dr. Ramendra Kr. Singh
D. K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner